DEPARTEMENT OF HINDI

Sruthi .K

विशेषण (ADJECTIVE)

विशेषण : विशेषण एक विकारी शब्द है। विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।
जैसे-अच्छा लड़का, तीन पुस्तकें, नई क़लम।

विशेष्य किसे कहते हैं?

- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है। और विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताता है उसे विशेष्य कहते हैं। विशेष्य या तो संज्ञा रूप में होता है या फिर क्रिया रूप में।
- **उदाहरण**-काला घोड़ा, चार केले, लंबी मेज ।
- उदाहरण के अनुसार, काला, चार, लंबी, विशेषण
- है, और घोड़ा, केले, मेज़ विशेष्य है।

- **वर्गीकरण:-**
- हिंदी में विशेषण 4 प्रकार के होते हैं। :

- 1.**गुणवाचक विशेषण**
- 2.**परिमाणवाचक विशेषण**
- 3.**संख्यावाचक विशेषण**
- 4.**सार्वनामिक विशेषण**

1.गुणवाचक विशेषण

- जिस विशेषण से किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम का गुण प्रकट हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे :- गुण : अच्छा,चालाक,बुद्धिमान आदि
- व्यवहार: बुरा,गंदा,दुष्ट आदि।
- रंग : काला,लाल,सफेद, हरा,नीला आदि ।
- आकार : लंबा,छोटा,गोल,मोटा आदि ।
- अवस्था : बीमार,घायल, क्षतिग्रस्त आदि ।
- स्थान : पंजाबी,भारतीय,बंगाली,मारवाड़ी आदि।

2.परिमाणवाचक विशेषण

- जिससे किसी चीज की परिमाण या मात्रा का बोध होता है उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे :
- **थोड़ा** पानी, **बहुत** दूध इत्यादि।
- यहां पर थोड़ा और बहुत यह दोनों विशेषण है। जो क्रमानुसार पानी और दूध के परिमाण को समझा रहा हैं।

3.संख्यावाचक विशेषण

- जिससे संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे :
- '*एक **किताब**, दो **मनुष्य**, तीन,'भाई*चार',,,लड़के इत्यादि। यहां पर एक, दो तीन और चार यह चार विशेषण है। जिससे क्रमानुसार किताब, मनुष्य, भाई और लड़के की संख्या का बोध हो रहा हैं।

4.सार्वनामिक विशेषण

- ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले लगकर उस संज्ञा शब्द की विशेषण की तरह विशेषता बताते हैं, वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।
- यह शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं।
- जैसे: मेरी पुस्तक , कोई बालक , किसी का महल , वह लड़का , वह बालक , वह पुस्तक , वह आदमी ,वह लडकी आदि।

प्रयोग की दृष्टि से विशेषण के भेद

1. विशेष्य-विशेषण
2. विधेय-विशेषण

- **विशेष्य-विशेषण**
- जो विशेषण विशेष्य से पहले आकर उसकी विशेषता बताते है। उसे विशेष्य-विशेषण कहते है तथा वह विशेष्य-विशेष होता हैं। जैसे- राजेश ‘नटखट’ बालक है। सुनीता ‘गंभीर’ लड़की है। इन वाक्यों में ‘राजेश’ और ‘सुनीता’ क्रमशः बालक और लड़की के विशेषण हैं, जो संज्ञाओं (विशेष्य) के पहले आए हैं।

- **<u>विधेय-विशेषण</u>**
- जो विशेषण ,विशेष्य और क्रिया के बीच आकर उसकी विशेषता बताते है,उसे विधेय-विशेषण कहते है तब वहाँ पर विधेय-विशेषण होता हैं।
  जैसे- मेरा घोड़ा **लाल** हैं।
  तुम्हारा दामाद **आलसी** है।
  इन वाक्यों में लाल और आलसी ऐसे विशेषण हैं,जो क्रमशः घोड़ा (संज्ञा) और है (क्रिया) तथा दामाद (संज्ञा) और है (क्रिया) के बीच आए हैं।

विशेषणों की तुलना

- जिन विशेषणों के द्वारा दो या अधिक विशेष्यों के गुण-अवगुण की तुलना की जाती है, उन्हें 'तुलनाबोधक विशेषण' कहते हैं। तुलनात्मक दृष्टि से एक ही प्रकार की विशेषता बतानेवाले पदार्थों या व्यक्तियों में मात्रा का अन्तर होता है। तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं:-

मूलावस्था (पॉजिटिव डिग्री)

- इसके अंतर्गत विशेषणों का मूल रूप आता है। इस अवस्था में तुलना नहीं होती, सामान्य विशेषताओं का उल्लेख मात्र होता है।
- जैसे-अंशु अच्छी लड़की है।
  आशु सुन्दर है।
- तत्सम शब्दों की उत्तमावस्था के लिए 'तम' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

  जैसे- सुन्दर + तम > सुन्दरतम
  महत् + तम > महत्तम

उत्तमावस्था (सुपरलेटिव डिग्री)

- यह विशेषण की सर्वोत्तम अवस्था है। जब दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं के बीच तुलना की जाती है और उनमें से एक को श्रेष्ठता या निम्नता दी जाती है, तब विशेषण की उत्तमावस्था कहलाती है।
- जैसे- कपिल सबसे या सबों में अच्छा है।
  दीपू सबसे घटिया विचारवाला लड़का है।

उत्तरावस्था (कम्पेरेटिव डिग्री)

- जब दो व्यक्तियों या वस्तुओं के बीच अधिकता या न्यूनता की तुलना होती है, तब उसे विशेषण की उत्तरावस्था कहते हैं।
- जैसे- अंशु आशु से अच्छी लड़की है।
  आशु अंशु से सुन्दर है।
- उत्तरावस्था में केवल तत्सम शब्दों में 'तर' प्रत्यय लगाया जाता है।
- जैसे- सुन्दर + तर > सुन्दरतर
  महत् + तर > महत्तर

विशेषणों की रचना

- विशेषण पदों की रचना प्रायः सभी प्रकार के शब्दों से होती है। शब्दों के अन्त में ई, इक, मान्, वान्, हार, वाला, आ, ईय, शाली, हीन, युक्त, ईला प्रत्यय लगाने से और कई बार अंतिम प्रत्यय का लोप करने से विशेषण बनते हैं।
- **'ई' प्रत्यय** : शहर-शहरी, भीतर-भीतरी, क्रोध-क्रोधी
- **'इक' प्रत्यय** : शरीर-शारीरिक, मन–मानसिक, अंतर-आंतरिक
- **'मान्' प्रत्यय** : श्री-श्रीमान्, बुद्धि–बुद्धिमान्, शक्ति-शक्तिमान्
- **'वान्' प्रत्यय** : धन-धनवान्, रूप-रूपवान्, बल-बलवान्
- **'हार' प्रत्यय** : सृजन-सृजनहार, पालन-पालनहार
- **'आ' प्रत्यय** : रथ रथवाला, दूध-दूधवाला भूख-भूखा, प्यास-प्यासा
- **'ईय' प्रत्यय** : भारत-भारतीय, स्वर्ग-स्वर्गीय
- **'ईला' प्रत्यय** : चमक-चमकीला, नोंक-नुकीला
- **'हीन' प्रत्यय** : धन-धनहीन, तेज-तेजहीन, दया–दयाहीन
- **धातुज** : नहाना–नहाया, खाना-खाया, खाऊ, चलना–चलता, बिकना–बिकाऊ
- **अव्ययज** : ऊपर-ऊपरी, भीतर-भीतर-भीतरी, बाहर-बाहरी

THANK YOU